Advocacy_Info graphics_Final_Edit_Print.pdf 1 7/9/2018 4:05:04 PM

किशोर - किशोरियाँ मौजूदा स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच सकती हैं, अगर

- सरकार स्वास्थ्य सेवाओं, सुविधाओं की माँग और आपूर्ति में संतुलन बनाये जैसे जरूरी उपकरणों, चिकित्सक, विशेषज्ञ चिकित्सक व नर्सिंग स्टॉफ आदि की कमी को दूर करे।
- बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर करने के साथ ही स्वास्थ्य केंद्रों तक जाने के रास्ते सुगम व सुरक्षित बनाए और आने-जाने के साधनों के साथ ही मार्ग में प्रकाश की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।
- बजट को बढ़ाने के साथ ही उनका बेहतर उपयोग और खर्च सुनिश्चित किया जाए।
- किशोर मैत्री स्वास्थ्य क्लीनिक का विस्तार के साथ उनकी गुणवत्ता, किशोर-किशोरियों के अनुकूल माहौल और वहाँ के स्टॉफ की क्षमता वृद्धि पर ध्यान दिया जाए।

परिवार और समुदाय की क्या भूमिका हो सकती है

घर,समुदाय,स्कूल और सरकार के स्तर पर किशोर-किशोरियों को बेहतर स्वास्थ्य के लिए **जागरुक** किया जाए और स्वास्थ्य सुविधाओं के उपयोग हेतु अभियान चलाकर उन्हें **प्रेरित** किया जाए।

किशोर-किशोरियों को यौन,प्रजनन स्वास्थ्य और उनके अधिकारों के बारे में जानकारी दी जाए, इन विषयों पर घर, स्कूल और **समुदाय के स्तर पर नियमित चर्चा** की जाए।

किशोरियों की सुरक्षा और उनके बाहर आने-जाने का **माहौल सुरक्षित** बनाने पर सरकार के साथ ही **समुदाय के स्तर पर प्रभावी प्रयास** किये जाएं।

SUPPORTED BY
IKEA Foundation

ब्रेकथ्रू

www.inbreakthrough.tv
Breakthrough India @
Plot No. 3, DDA, Community Centre Zamroodpur, New Delhi 110048.
contact@breakthrough.tv

दे ताली
बनेगी बात साथ-साथ

स्वस्थ आज तो बेहतर कल

पिंकी का मन आज-कल पढ़ाई में नहीं लग रहा है उसे कमज़ोरी महसूस होती है और बार-बार चक्कर आते हैं, कई बार तो उसका स्कूल जाना भी छूट जाता है। सब-सेंटर पर आयरन की गोली न मिलने के कारण जब वो असुरक्षित रास्ते से होते हुए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पहुँचती है तो वहाँ कई बार कोई स्वास्थ्यकर्मी ही उपलब्ध नहीं होता है, जिससे वो अपनी बात कह सके। वो अकसर इस कठिनाई से लड़ती है।

क्या यह कहानी सिर्फ पिंकी की है?

यह कहानी उत्तर प्रदेश की उन 71 फीसदी किशोरियों की है जिनको आयरन फोलिक एसिड की एक गोली तक नहीं मिल पाती है और जिसकी वजह से उनके शरीर में खून की कमी बनी रहती है।

क्या आप जानते हैं?

उत्तर प्रदेश के 10-19 वर्ष के लगभग 86 प्रतिशत किशोर - किशोरियों में अत्याधिक खून की कमी है।*

15-19 वर्ष की लगभग 21 प्रतिशत अविवाहित किशोरियों और 30 प्रतिशत विवाहित किशोरियों में खून की कमी पाई गई है।*

लगभग 22 प्रतिशत किशोरियों का कम उम्र में विवाह होने के कारण गर्भपात हो जाता है।**

15-24 वर्ष की 53 प्रतिशत किशोरियाँ और युवतियां, माहवारी के समय सुरक्षित तरीकों का इस्तेमाल नहीं करती हैं।**

*Source: popcouncil.org/uploads/pdfs/2017PGY_UDAYA-RKSKPolicyBriefUP.pdf

**Source: NFHS-4/UP/2015-16

ब्रेकथ्रू

Advocacy_Info graphics_Final_Edit_Print.pdf 2 7/9/2018 4:05:04 PM

उत्तर प्रदेश में सरकार द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत विभिन्न स्वास्थ्य कल्याण योजनाओं के लिए आवंटित बजट व खर्च

2015-16

368960.20 आवंटित बजट (लाख में)

201276.10 खर्च (लाख में)

2016-17

749538.54 आवंटित बजट (लाख में)

197185.04 खर्च (लाख में) (दिसबंर 2016 तक)

राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम (आर.के.एस.के.) के अन्तर्गत आवंटित बजट व खर्च

2015-16

696.00 आवंटित बजट (लाख में)

385.91 खर्च (लाख में)

2016-17

9544.13 आवंटित बजट (लाख में)

2452.26 खर्च (लाख में) (दिसबंर 2016 तक)

आंकड़ों से साफ है कि स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए सरकार द्वारा बजट का आवंटन बढ़ाकर लगभग दोगुना (49 फीसदी) कर दिया गया।

Source: nhm.gov.in/nrhm-in-state/state-program-implementation-plans-pips/uttar-pradesh.html

उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम के विप्स कार्यक्रम के अन्तर्गत मार्च 2018 तक एनिमिया कंट्रोल के लिए लक्षित 1.2 करोड़ किशोरियों में से सिर्फ 29 फीसदी को इसका लाभ दिया जा सका है।मार्च 2017 तक यह आंकड़ा सिर्फ 12 फीसदी था।

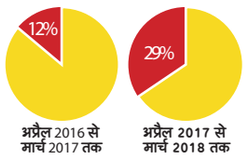

किशोर मैत्री स्वास्थ्य केंद्र

75 जिलों में से सिर्फ 57 जिलों के जिला अस्पताल / सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में किशोर मैत्री स्वास्थ्य क्लीनिक है।

पियर एजुकेटर कार्यक्रम

पियर एजुकेटर कार्यक्रम सिर्फ 25 जिलों में है।

माहवारी स्वच्छता प्रबंधन व विप्स कार्यक्रम सभी 75 जिलों में चलाए जा रहे हैं।

स्कूल और अस्पताल के रास्ते सुगम और सुरक्षित नहीं है, आवागमन के साधन भी सीमित!

7231/20521 कुल 20521 सेंटरो में से 7231 तक पहुंचने के लिए सभी मौसमों के अनुकूल सड़क मौजूद नहीं है।

459/3621 3621 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में से 459 का भी हाल ऐसा ही है।

Source: nrhm-mis.nic.in/Pages/RHS2016.aspx

एनसीआरबी के आंकड़ों के मुताबिक 2015 में उत्तर प्रदेश में यौन उत्पीड़न के 5925 मामले दर्ज हुए वहीं 2016 में इसमें 59 फीसदी का इजाफा देखा गया जो 9422 हो गए।

जनवरी से अक्टूबर 2017 के बीच विमेन पॉवर लाइन 1090 के आंकड़ों के मुताबिक 46 फीसदी छात्राओं को उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। इस अवधि में यौन उत्पीड़न के कुल 199464 मामले सामने आए।

ये समस्याएँ सिर्फ इसलिए हैं क्योंकि

- ज्यादातर किशोरियाँ सेनेटरी पैड्स और आयरन फोलिक एसिड जैसी स्वास्थ्य सुविधा / योजना तक नहीं पहुँच पाती हैं क्योंकि अधिकतर लोग मानते हैं कि माहवारी और यौन स्वास्थ्य समस्याओं को किसी भी उपचार या परामर्श की आवश्यकता नहीं होती है।
- सेवा प्रदाता में काम के प्रति जुड़ाव, समर्पण और जवाबदेही का अभाव है।
- सुविधाओं के वितरण और आपूर्ति में तालमेल नहीं है जिससे स्वास्थ्य सेवाएं नियमित उपलब्ध नहीं हो पाती हैं।

स्वास्थ्य के मुद्दे पर परिवार और समुदाय की सोच

किशोरी स्वास्थ्य और पोषण पर मौखिक रूप से बराबरी की बातें तो होती है लेकिन वास्तव में अमल न होना।

लड़कियों के स्वास्थ्य और शिक्षा में निवेश को फिजूलखर्ची समझना और महत्व न देना।

किशोरी को पोषण की अधिक ज़रूरत है, इस बात को स्वीकार न करना।

किशोर भी एनिमिक (खून की कमी) हो सकते हैं, न जानते और न मानते हैं।

यौन एवं प्रजनन स्वास्थ्य के प्रति शर्म और गोपनीयता की सोच।

स्वास्थ्य और उससे संबंधित समस्याओं पर पिता-पुत्र,मां-बेटी और दोस्तों के बीच संवाद न होना।